## Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

## License Information

**अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)** (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

# अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

## 2CO

*2 कुरिन्थियों 1:1–11, 2 कुरिन्थियों 1:12–22, 2 कुरिन्थियों 1:23–2:11, 2 कुरिन्थियों 2:12–17, 2 कुरिन्थियों 3:1–18, 2 कुरिन्थियों 4:1–18, 2 कुरिन्थियों 5:1–10, 2 कुरिन्थियों 5:11–6:10, 2 कुरिन्थियों 6:11–7:1, 2 कुरिन्थियों 7:2–16, 2 कुरिन्थियों 8:1–9:5, 2 कुरिन्थियों 9:6–15, 2 कुरिन्थियों 10:1–18, 2 कुरिन्थियों 11:1–15, 2 कुरिन्थियों 11:16–33, 2 कुरिन्थियों 12:1–10, 2 कुरिन्थियों 12:11–20, 2 कुरिन्थियों 12:21–13:14*

## 2 कुरिन्थियों 1:1–11

पौलुस ने इस पत्र को लिखने से कुछ वर्ष पहले कलीसिया की स्थापना कुरिन्थ में की थी।

कुरिन्थ के विश्वासियों ने यीशु के बारे सुसमाचार का प्रचार फैलाना जारी रखा था। अखाया के आसपास के क्षेत्रों में कई लोगों ने यीशु का अनुसरण करना शुरू कर दिया था। पौलुस चाहता था कि ये लोग भी इस पत्र को पढ़ें।

पौलुस ने दिखाया कि यीशु के साथ जो कुछ हुआ, वह उसके अनुयायियों के साथ भी होगा। जब यीशु पृथ्वी पर थे, तो उन्होंने बहुत कष्टों का सामना किया। परमेश्वर ने उनके कष्टों में उन्हें सांत्वना दी।

पौलुस ने आसिया के उपद्वीप में भयानक कष्टों का सामना किया था। यह इतना कठिन था कि उन्हें लगा कि वह मरने वाले हैं। जब वह कष्ट में थे, तब परमेश्वर ने उन्हें शान्ति दी। पौलुस ने स्वयं को यीशु के बहुत करीब महसूस किया और वह परमेश्वर पर और अधिक गहराई से विश्वास करने लगे। इससे उन्हें कुरिन्थ के विश्वासियों को उनके कष्टों में शान्ति देने में मदद मिली।

## 2 कुरिन्थियों 1:12–22

पहले की पत्री में, पौलुस ने कुरिन्थियों से कहा था कि वह उनसे मिलने के लिए वापस आएगा। परन्तु बाद में उसे अपनी योजनाएँ बदलनी पड़ीं। इस कारण से कुरिन्थियों ने सोचा कि वे अब पौलुस पर भरोसा नहीं कर सकते। उन्हें लगा कि वह एक बात कहते हैं लेकिन कुछ और करते हैं।

यदि वे पौलुस पर भरोसा नहीं कर सकते, तो वे उस सुसमाचार पर भी भरोसा नहीं कर सकते जो उसने प्रचार किया। पौलुस ने स्पष्ट किया कि कुरिन्थ के विश्वासियों को उनके कहे पर भरोसा हो सकता है। यीशु के बारे में संदेश, जो उन्होंने, सिलास और तीमुथियुस ने प्रचार किया, उस पर भी भरोसा किया जा सकता है। उन्होंने प्रचार किया कि परमेश्वर हमेशा विश्वासयोग्य हैं। परमेश्वर उन सभी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेंगे जो उन्होंने किए हैं।

यीशु की क्रूस पर मृत्यु और उनका पुनरुत्थान यह स्पष्ट करता हैं कि यह सत्य है। पौलुस ने कहा कि विश्वासियों को अभिषिक्त किया गया है। इसका मतलब है कि परमेश्वर ने उन्हें अपने परिवार का हिस्सा बनने के लिए चुना है। परमेश्वर की आत्मा उनके अंदर निवास करती है। पवित्र आत्मा उन्हें यह विश्वास दिलाने में मदद करता है कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेंगे।

## 2 कुरिन्थियों 1:23–2:11

पौलुस ने हाल ही में कुरिन्थ के विश्वासियों से मुलाकात की थी। कुरिन्थ में किसी ने पौलुस के लिए परेशानी खड़ी करने की कोशिश की थी। उन्होंने कलीसिया को यह समझाने की कोशिश की कि वे पौलुस के साथ दुश्मन जैसा व्यवहार करें। पौलुस दुखी और आहत थे। वे जल्दी से चले गए।

इसका परिणाम यह हुआ कि पौलुस ने उन्हें पत्र भेजा जिसे लिखना कठिन था। पौलुस के पत्र को प्राप्त करने के बाद कलीसिया ने परिवर्तन किए। उन्होंने दोषी व्यक्ति को सुधारा और उसके बाद उसने परेशानी पैदा करना बंद कर दिया। कलीसिया में फिर से व्यवस्था और शान्ति आ गई।

अब पौलुस ने उनसे कहा कि वे उस व्यक्ति को क्षमा करें। उन्हें उसे फिर से विश्वासियों की संगति का हिस्सा बनने में मदद करनी चाहिए। जब विश्वासी क्षमा करते हैं, तो यह शैतान की इच्छा के विपरीत होता है। शैतान दुष्टात्मा का दूसरा नाम है। पौलुस ने कहा कि उन्होंने पहले ही उस व्यक्ति को क्षमा कर दिया है। पौलुस ने सुनिश्चित किया कि कुरिन्थ के विश्वासियों को पता चले कि वे उनसे कितनी गहराई से प्रेम करते हैं।

## 2 कुरिन्थियों 2:12–17

पौलुस ने यीशु के बारे में सिखाते हुए कई शहरों की यात्रा की। उन्होंने अपने कार्य को मसीह की विजय यात्रा में होने के समान बताया।

यीशु वह राजा हैं जिन्होंने पाप, मृत्यु और बुराई पर विजय प्राप्त की है। पौलुस और वे विश्वासी जिनके साथ उन्होंने यात्रा की और काम किया, उस यात्रा में बंदियों की तरह थे। यह दर्शाता है कि वे यीशु के सेवक थे। उनका काम था कि वे जहाँ भी जाएँ, मसीह के बारे में शिक्षा फैलाएँ।

कुछ लोग यीशु के बारे में संदेश सुनते हैं और उनके विजय का उत्सव मनाते हैं। उनके लिए, यह संदेश अनंत जीवन की ओर ले जाता है। पौलुस ने कहा कि यह जीवन की सुगंध फैलाने जैसा है।

परन्तु कुछ लोग यीशु पर विश्वास करने से इनकार करते हैं। जब वे संदेश सुनते हैं, तो वे उस जीवन को ठुकरा देते हैं जो यीशु देते हैं। इन लोगों के लिए यीशु के बारे में संदेश मृत्यु की दुर्गंध है।

पौलुस ने प्रेरित के रूप में अपने कार्य के बारे में कुछ स्पष्ट किया। उन्होंने और उनके सहकर्मियों ने यीशु के बारे में प्रचार धन कमाने के लिए नहीं किया।

## 2 कुरिन्थियों 3:1–18

कुछ लोग यह प्रमाण चाहते थे कि पौलुस वास्तविक प्रेरित थे। वे अन्य अगुवो से पत्र देखना चाहते थे, जिससे यह सिद्ध हो कि पौलुस पर विश्वास किया जा सकता है। परन्तु पौलुस का प्रेरित के रूप में अधिकार परमेश्वर से आया था, न कि अन्य अगुवो से।

पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को उस पत्र के रूप में वर्णित किया जिसे यीशु ने लिखा था। उनका मतलब था कि उनके जीवन से यह स्पष्ट होता है कि पौलुस मसीह के बारे में सत्य सिखा रहे थे। पौलुस ने अपने महत्व का दावा नहीं किया। उन्होंने केवल सेवा करने वाले अगुवे होने के यीशु के उदाहरण का अनुसरण करने का दावा किया।

परमेश्वर के सेवक के रूप में, पौलुस ने लोगों को पुरानी वाचा और नई वाचा के बीच का अंतर सिखाया। पुरानी वाचा सीनै पर्वत पर दी गई वाचा थी। उस वाचा की प्रतिज्ञाएँ यीशु की ओर संकेत करती थीं।

नई वाचा लोगों के हृदयों को बदलती है और उन्हें सदा के लिए परमेश्वर के साथ सही बनाती है। बहुत से लोग इसे नहीं समझते हैं। यह ऐसा है जैसे उनके मन पर आवरण है जो उन्हें समझने से रोकता है। परन्तु परमेश्वर की आत्मा उन लोगों को जो परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं, इसे समझने में मदद करती है। वह उन्हें अनन्त जीवन देते हैं और उन्हें यीशु के समान बनने में मदद करते हैं।



## 2 कुरिन्थियों 4:1–18

प्रेरित के रूप में अपने कार्य में, पौलुस ने परमेश्वर के बारे में खुलकर सत्य बोला। उन्होंने गुप्त रूप से कुछ नहीं किया और उन्हें शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं थी।

हर कोई सुसमाचार को स्वीकार नहीं करता। पौलुस ने इसे अंधकार में होने और देखने में असमर्थ होने जैसा बताया। वह शारीरिक आँखों से देखने की बात नहीं कर रहे थे। बल्कि वह आध्यात्मिक बातों को समझने की बात कर रहे थे।

पौलुस ने शैतान को इस संसार का देवता बताया। शैतान नहीं चाहता कि लोग यीशु के बारे में सत्य को जानें। जो लोग यीशु के संदेश को स्वीकार करते हैं, वे आत्मिक रूप से अंधे या अंधकार में नहीं होते। उनके हृदय में परमेश्वर का प्रकाश होता है।

यीशु के बारे में सुसमाचार जानना अद्भुत और विशेष बात है। पौलुस ने इसे खजाना कहा। यह खजाना शक्तिशाली और सामर्थी है और परमेश्वर से आता है। परमेश्वर सुसमाचार के खजाने को मनुष्यों के साथ साझा करने का चयन करते हैं।

पौलुस ने मानव देह को मिट्टी के बर्तन के समान बताया। उनका मतलब था कि मानव देह कमजोर होती हैं और हमेशा के लिए नहीं रहती। पौलुस ने बताया कि वह और जिनके साथ उन्होंने सेवा की, वे कितने कमजोर थे। उन्होंने यीशु की सेवा करते हुए लगातार खतरे और दर्दनाक कष्टों का सामना किया। परन्तु उनकी परेशानियों का कोई महत्व नहीं था उस महिमा की तुलना में जो यीशु उनके साथ साझा करेंगे। ऐसा तब होगा जब परमेश्वर उन्हें मृतकों में से जी उठाएंगे। पुनरुत्थान ने उन्हें अपना कार्य जारी रखने की आशा दी।

## 2 कुरिन्थियों 5:1–10

पौलुस ने मानव देह को तंबुओं के समान बताया जो हमेशा के लिए नहीं रहेंगे। मृतकों में से जी उठने के बाद विश्वासियों को नई देह मिप्राप्त होगी

पौलुस ने नई देह को इमारत या घर की तरह वर्णित किया जो हमेशा के लिए रहेगा। ये देह यीशु के सामर्थी जीवन से परिपूर्ण होगी और कभी नष्ट नहीं की जा सकती।

विश्वासी अपनी नई देह की लालसा करते हैं। वे अपने प्रभु के साथ रहने की लालसा करते हैं।

पवित्र आत्मा अब विश्वासियों में वास करता है। आत्मा चिह्न और प्रतिज्ञा है कि वे प्रभु के साथ होंगे। यह तब होगा जब न्याय का दिन आएगा।

## 2 कुरिन्थियों 5:11–6:10

कुछ लोग कुरिन्थ की कलीसिया में पौलुस और उनके साथ काम करने वालों के विरुद्ध बोलते थे। वे नहीं चाहते थे कि कुरिन्थ के लोग पौलुस पर प्रेरित के रूप में विश्वास करें। उन्होंने पौलुस और उनके सहकर्मियों पर पागल होने का आरोप लगाया। उन्होंने दावा किया कि वे पौलुस से बेहतर दिखते हैं। उन्होंने दावा किया कि उनकी बातें पौलुस और उनके साथियों के बातों से अधिक समझ में आते हैं। उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि लोग उन पर विश्वास करें, न कि उस पर जो पौलुस ने प्रचार किया।

पौलुस ने समझाया कि कुरिन्थ के विश्वासियों को उन पर और उनके सहकर्मियों पर गर्व हो सकता है। उन्हें गर्व हो सकता है क्योंकि पौलुस और उनके साथी परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य थे। वे दूसरों की सेवा करते थे और मसीह के प्रेम से परिपूर्ण थे। वे यीशु द्वारा भेजे गए संदेशवाहक थे, जो लोगों से परमेश्वर की दया प्राप्त करने की विनती करते थे। परमेश्वर ने अपनी दया तब दिखाई जब यीशु ने क्रूस पर अपने प्राण दिए। उसी समय यीशु ने लोगों पर पाप की शक्ति को समाप्त कर दिया। पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों के लिए परमेश्वर के साथ शान्ति से जीने की संभावना प्रदान की। यही परमेश्वर के पास वापस लाए जाने का अर्थ है। परमेश्वर के पास वापस लाए जाने का अर्थ परमेश्वर के साथ सही संबंध में होना है।

जो लोग परमेश्वर के पास वापस लाए गए हैं, वे यीशु मसीह के लिए जीते हैं। यह ऐसा है जैसे वे जिस तरह से जीवन जीते थे, वह अब समाप्त हो गया है। अब वे नई सृष्टि का हिस्सा हैं। वे परमेश्वर के साथ मिलकर काम करते हैं ताकि सभी को परमेश्वर के पास लौटने के लिए आमंत्रित कर सकें। पौलुस और उनके सहकर्मी इस काम को करते समय कई खतरों का सामना करते थे। वे परमेश्वर के प्रति तब भी विश्वासयोग्य बने रहे, जब उनके साथ बुरा व्यवहार किया गया। पवित्र आत्मा की सामर्थ ने उन्हें यीशु के उदाहरण का अनुसरण करने की ताकत दी।

## 2 कुरिन्थियों 6:11–7:1

यूहन्ना अध्याय 15 में, यीशु ने इस बात पर चर्चा की कि कैसे विश्वासी प्रेम के माध्यम से उनसे जुड़े रहते हैं। पौलुस ने वर्णन किया कि कैसे वह और कुरिन्थ के विश्वासी भी प्रेम द्वारा एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। पौलुस ने स्पष्ट किया कि उन्होंने कुरिन्थ के विश्वासियों की सेवा इसलिए की क्योंकि वह परमेश्वर से प्रेम करते थे। पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों से विनती की कि वे भी उन्हें अपना प्रेम दिखाएँ।

परन्तु उन्हें सावधान रहना चाहिए कि वे अपने हृदय किसके सामने खोल रहे हैं। पौलुस ने उन्हें उन लोगों से जुड़ने के बारे में चेतावनी दी जो यीशु से प्रेम नहीं करते और उनकी सेवा नहीं करते। बहुत से लोग परमेश्वर के प्रकाश को नहीं चाहते। वे एकमात्र सच्चे परमेश्वर के बजाय झूठे देवताओं की उपासना करते हैं। वे बुराई को ना नहीं कहते।

जो लोग यीशु पर विश्वास करते हैं, उनके बीच परमेश्वर निवास करते हैं। वे यीशु के जीवन जीने के उदाहरण का अनुसरण करके शुद्ध और पवित्र बने रहते हैं। इसका अर्थ है कि वे बुराई को नकारते हैं।

## 2 कुरिन्थियों 7:2–16

पहले पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों को दुख भरा पत्र लिखा था। इसे लिखना उनके लिए कठिन था और इसने उन्हें बहुत दुखी कर दिया था। इस पत्र ने कुरिन्थ के विश्वासियों को भी दुखी कर दिया था।

विश्वासियों का दुख उन्हें उनके पाप से मुड़ने और पश्चाताप करने के लिए प्रेरित करता है। पौलुस ने इसे परमेश्वर-भक्ति का शोक कहा। इस दुख ने कुरिन्थ के विश्वासियों को जीवन के परमेश्वर की ओर मुड़ने के लिए प्रेरित किया।

यह उस उदासी से बहुत अलग है जो लोगों को दुखी और परमेश्वर से दूर महसूस कराती है। पौलुस ने इसे सांसारिक दुख कहा। यह लोगों को इतना दुखी कर सकती है कि वे मरना की इच्छा करने लगते हैं।

जो धार्मिक दुख कुरिन्थियों ने महसूस किया, उसने उन्हें उनके जीवन जीने के तरीके में बदलाव करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने फिर से अपने समुदाय की देखभाल करना शुरू किया। वे फिर से परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य हो गए। उन्होंने पौलुस का ध्यान रखा और उनके सहायक तीतुस के साथ अच्छा व्यवहार किया। इससे पौलुस को बहुत आनन्द और सांत्वना मिली।

## 2 कुरिन्थियों 8:1–9:5

मकिदुनिया के विश्वासी दूसरों को उदारता से देने में आदर्श थे। पौलुस ने दूसरों को देने को अनुग्रह कहा। यह उस अनुग्रह पर आधारित है जो यीशु ने दिखाया। यीशु ने दूसरों की सहायता के लिए अपना सब कुछ दे दिया।

विश्वासियों को यीशु से क्षमा, प्रेम और अनन्त जीवन प्राप्त होता है। इसलिए उन्हें दूसरों पर अनुग्रह दिखाना चाहिए और उन्हें उदारता से देना चाहिए। पौलुस ने जिन कलीसियाओं की स्थापना की थी, वे जरूरतमंद लोगों के लिए धन एकत्र कर रहे थे। जो यरूशलेम की कलीसिया में से थे। पौलुस, तीतुस और अन्य सेवक इसे पहुँचाने का कार्य करेंगे।

पौलुस यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि कुरिन्थियों के पास समय पर उनका धन तैयार हो। यह भेंट गैर-यहूदी विश्वासियों के लिए यहूदी विश्वासियों की देखभाल करने का एक तरीका था। इससे पता चलता है कि परमेश्वर के लोग एकता में जुड़े हुए हैं।

## 2 कुरिन्थियों 9:6–15

पौलुस के भेंट के बारे में निर्देश यह सिखाते हैं कि उदारता से देना क्या होता है। विश्वासियों को मजबूर नहीं किया जाता कि वे अपनी धन-संपत्ति या अपनी वस्तुएं जरूरतमंदों को दें। वे इसलिए देते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के उदारता से देने के उदाहरण का अनुसरण करते हैं। वे इसलिए देते हैं क्योंकि वे लोगों की मदद करना चाहते हैं।

विश्वासी इसलिए देते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि उनके पास जो कुछ भी है, वह परमेश्वर का वरदान है। यही कारण हैं कि इस्राएली अपनी हर चीज का दसवां हिस्सा देते थे। यह मूसा की व्यवस्था में आवश्यक था।

उदारता से देना, यह दर्शाता है कि विश्वासी परमेश्वर पर भरोसा करते हैं कि वे जो कुछ भी उन्हें चाहिए, वह प्रदान करेंगे। वे उन पर भरोसा करते हैं जैसे भोजन के लिए जो उनकी देह को चाहिए। वे उन पर भरोसा करते हैं जैसे प्रेम और अनुग्रह के लिए जो उनकी आत्मा को चाहिए। विश्वासी परमेश्वर पर यह भरोसा भी करते हैं कि वे उन्हें उनकी आज्ञा मानने की क्षमता देंगे।

पौलुस ने अच्छे कार्यों को उन बीजों के समान बताया जो विश्वासी बोते हैं। उन्होंने कहा कि परमेश्वर यह बीज प्रदान करते हैं। इसका अर्थ है कि परमेश्वर विश्वासियों को दूसरों को देने की क्षमता देते हैं। परमेश्वर इस बात के प्रभारी हैं कि जब विश्वासी दूसरों के लिए अच्छा करते हैं तो उसके बाद क्या होता है।

येरूशलेम में प्रभु के लोगों को बहुत कठिन समय का सामना करना पड़ा। उनके पास पर्याप्त धन या भोजन नहीं था। गैर-यहूदी कलीसियाओं से मिलने वाली धन की भेट उनकी सहायता करेगी। यहूदी विश्वासी इस वरदान के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करेंगे और उनकी स्तुति करेंगे। वे उन गैर-यहूदी विश्वासियों के लिए प्रार्थना करेंगे जिन्होंने उनके साथ अपनी संपत्ति साझा किया था।

## 2 कुरिन्थियों 10:1–18

पौलुस ने यीशु का वर्णन नम्र और अहंकार से मुक्त के रूप में किया। पौलुस ने दिखाया कि उन्होंने कैसे प्रेरित के रूप में अपने कार्य में यीशु के उदाहरण का अनुसरण किया। पौलुस



बहुत नम्र थे जब वे कुरिन्थ के विश्वासियों के बीच काम कर रहे थे। वे इतने नम्र थे कि कई लोग सोचते थे कि वे संकोची हैं।

परन्तु दूसरों ने सोचा कि पौलुस ने इस बारे में डींग मारी कि उनका प्रेरित के रूप में अधिकार यीशु से आया था। पौलुस ने स्पष्ट किया कि वह अपने या अपने काम के बारे में गर्व से भरे नहीं थे। उन्होंने केवल उस काम के बारे में डींग मारी जो परमेश्वर ने किया था। पौलुस को उस काम के बारे में पूरी तरह से यकीन था जो परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए दिया था। उन्हें दूसरों की सेवा करनी थी, सुसमाचार का प्रचार करके और लोगों को परमेश्वर को जानने में मदद करके।

जो कुछ भी लोगों को परमेश्वर को जानने से रोकता है, वह परमेश्वर का शत्रु है। पौलुस ने इन शत्रुओं का सामना किया जब उन्होंने प्रचार किया, सिखाया और अपने पत्र लिखे। उनके शब्दों और उनके जीवन जीने के तरीके ने लोगों को परमेश्वर के बारे में सत्य दिखाने में मदद की। उन्होंने साहसपूर्वक कुरिन्थियों के विश्वासियों को सुधारा। उन्होंने उन्हें तब सुधारा जब उन्होंने ऐसे कार्य किए जो परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध थे कि वे कैसे जीवन जिएं। उन्होंने यह इसलिए किया ताकि वे पूरी तरह से यीशु का अनुसरण करने के लिए समर्पित हो सकें।

## 2 कुरिन्थियों 11:1–15

अदन की वाटिका में, सर्प ने हव्वा से परमेश्वर के बारे में झूठ कहा। उसने उस पर विश्वास किया।

पौलुस नहीं चाहते थे कि कुरिन्थियों के विश्वासियों को परमेश्वर के बारे में झूठ से धोखा दिया जाए। झूठे शिक्षक, जिन्हें पौलुस ने महान प्रेरित कहा, कुरिन्थियों की कलीसिया में परेशानी पैदा कर रहे थे। वे यीशु और पवित्र आत्मा के बारे में असत्य बातें सिखा रहे थे।

पौलुस चाहते थे कि कुरिन्थ के विश्वासियों का यीशु के प्रति वफादार बना रहे। जब पौलुस उनके साथ थे, तब उन्होंने कुरिन्थ के विश्वासियों को यीशु के बारे में सत्य सिखाया था। पौलुस ने यह काम धन कमाने के लिए नहीं किया था। कुरिन्थ के विश्वासियों ने उनके बीच किए गए काम के लिए उन्हें कुछ भी नहीं दिया था। पौलुस ने यह सब इसलिए किया क्योंकि वह उनसे प्रेम करते थे।

## 2 कुरिन्थियों 11:16–33

महान प्रेरितों ने बहुत डींग मारी। उन्होंने दावा किया कि उनके पास पौलुस से अधिक वरदान और क्षमताएँ हैं। कुरिन्थ के विश्वासियों ने उन्हें स्वीकार किया और उन पर विश्वास किया।

इसलिए पौलुस ने कुरिन्थियों के विश्वासियों से उसी तरह बात की जैसे महान-प्रेरित करते थे। पौलुस ने उन्हें अपनी क्षमताओं और वरदानों के बारे में बताया। उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि वे उनके कार्य को समझ सकें। वे चाहते थे कि वे समझें कि डींग मारना मूर्खता है। यह वह तरीका नहीं था जिससे प्रभु बात करते।

झूठे प्रेरित अपनी ताकत के बारे में डींग मारते थे। पौलुस अपनी कमजोरी के बारे में डींग मारते थे। उन्हें पता था कि उनकी ताकत परमेश्वर से आती है, न कि स्वयं से।

पौलुस ने कुरिन्थियों को अपनी आज्ञा का पालन करने के लिए मजबूर नहीं किया। उन्होंने उनका फायदा नहीं उठाया या उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाया। उन्होंने उनके साथ वैसा बुरा व्यवहार नहीं किया जैसा झूठे प्रेरितों ने किया।

पौलुस ने यीशु की आज्ञा का पालन करने के लिए अपने जीवन में कई चीजों का बलिदान दिया था। उन्होंने अपने भविष्य के लिए जो योजनाएँ बनाई थीं, उन्हें छोड़ दिया। पौलुस का जीवन अक्सर खतरे में रहता था। उन्होंने अपनी देह और आत्मा में बहुत कष्ट सहे। इन चीजों ने पौलुस को कमजोर और असफल दिखाया। परन्तु पौलुस जानते थे कि वे मसीह की सेवा कर रहे थे। मसीह की सेवा करना ही उनके लिए महत्वपूर्ण था।

## 2 कुरिन्थियों 12:1–10

पौलुस ने ऐसे विश्वासी के बारे में बताया जिसे परमेश्वर से दर्शन मिला था। परमेश्वर ने इस व्यक्ति को स्वर्गीय लोक की बातें दिखाईं। फिर पौलुस ने अपने पाठकों को बताया कि वह विश्वासी वास्तव में वही थे।

झूठे शिक्षक और महा-प्रेरित अपने दर्शन के बारे में डींग मारते थे। वे अपने दर्शन को इस बात का प्रमाण मानते थे कि वे पौलुस से बेहतर थे। परन्तु पौलुस ने अपने दर्शन के बारे में डींग नहीं मारी।

पौलुस को एक समस्या थी जो उन्हें पीड़ा और कष्ट देती थी। इसने उनकी देह को कमजोर बना दिया। उन्होंने यह नहीं बताया कि यह समस्या क्या थी। पौलुस ने प्रार्थना की और परमेश्वर से इस समस्या को दूर करने के लिए कहा। परन्तु परमेश्वर ने इसे दूर करने का निर्णय नहीं लिया। इसके बजाय, यीशु ने पौलुस को यह स्पष्ट करके सांत्वना दी कि वे उनके साथ हैं। यीशु की कृपा ने पौलुस को आगे बढ़ने में मदद की। परमेश्वर का कार्य पूरा हुआ या नहीं, यह पौलुस की क्षमताओं पर निर्भर नहीं था। यह यीशु की सामर्थ पर निर्भर था।



## 2 कुरिन्थियों 12:11–20

पौलुस ने जल्द ही कुरिन्थ की कलीसिया का फिर से दौरा करने की योजना बनाई। परन्तु उन्हें डर था कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उन्हें क्या देखने को मिलेगा। इसलिए पौलुस ने उन्हें अपनी यात्रा के लिए तैयार होने का समय दिया।

पौलुस और महा-प्रेरितों के बीच कई अंतर थे। मुख्य अंतर यह था कि वे कुरिन्थियों से क्या चाहते थे। झूठे शिक्षक कुरिन्थियों का लाभ उठाना चाहते थे। पौलुस चाहते थे कि कुरिन्थ के विश्वासी पूरी तरह से यीशु के प्रति समर्पित हों। वे चाहते थे कि उनका यीशु मसीह में दृढ़ विश्वास हो। वे चाहते थे कि वे पाप से दूर हो जाएं। वे चाहते थे कि वे अपने विचारों, वचनों और दूसरों के साथ व्यवहार में यीशु की आज्ञा का पालन करें।

इसके लिए पौलुस कुरिन्थियों को सब कुछ देने के लिए तैयार थे। वह उन्हें वैसे ही प्यार करते थे जैसे पिता अपने बच्चों से करता है। पौलुस ने उनकी सेवा की क्योंकि वह उनके लिए सबसे अच्छा चाहते थे।

## 2 कुरिन्थियों 12:21–13:14

कुछ कुरिन्थ के विश्वासियों ने पाप से दूर होने से इनकार कर दिया। पौलुस ने उनसे पूछा कि क्या वे यीशु का अनुसरण करना चाहते हैं या नहीं। तो उन्होंने इसे स्वयं की परीक्षा लेना कहा। यदि वे वास्तव में विश्वासी होते, तो वे पश्चाताप करते।

पौलुस प्रेरित के रूप में अपनी अधिकारिता का उपयोग करके उन्हें सुधारने के लिए तैयार थे। वे साहसपूर्वक उन सभी तरीकों का विरोध करेंगे जिनसे वे यीशु के प्रति अविश्वासी हो रहे थे। परन्तु पौलुस आशा करते थे कि उन्हें ऐसा करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वे आशा करते थे कि वे उनके अगले दौरे से पहले पाप से दूर हो जाएंगे।

पौलुस ने अपने पत्र का समापन कुरिन्थ के विश्वासियों के लिए आशा के वचनों के साथ किया। पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों को एक साथ जीवन साझा करने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं। परमेश्वर उन्हें वह प्रेम और अनुग्रह देते हैं जिसकी उन्हें शान्ति से जीने के लिए आवश्यकता होती है।